

जी.एस. घुर्ये, एम.एन. श्रीनिवास, और ए.आर. देसाई के योगदान:

जी.एस. घुर्ये के योगदान

जी.एस. घुर्ये (1893–1983) ने भारतीय समाजशास्त्र को **इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण** के माध्यम से एक स्वदेशी पहचान दी, जो संस्कृत ग्रंथों (वेद, पुराण, मनुस्मृति), ऐतिहासिक स्रोतों, और सांस्कृतिक प्रथाओं पर आधारित था। उन्होंने भारतीय समाज को एक **सांस्कृतिक इकाई** के रूप में देखा, जिसमें **जाति, जनजाति, हिंदू धर्म, और राष्ट्रीय एकता** केंद्रीय थी। उनके कार्य ने भारतीय समाज की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक निरंतरता पर जोर दिया, जो पश्चिमी समाजशास्त्रीय मॉडलों (जैसे, ड्यूरेखाइम, वेबर) से अलग था। घुर्ये का दृष्टिकोण **मैक्रो-स्तर** पर था, जो सामाजिक संरचना की स्थिरता और एकीकरण पर केंद्रित था, लेकिन गतिशीलता (श्रीनिवास) या शोषण (देसाई) पर कम ध्यान दिया।

(i) घुर्ये का इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण:

विशेषताएँ:

ग्रंथ-आधारित विश्लेषण: घुर्ये ने वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, और पुराणों का उपयोग भारतीय समाज की संरचना (जैसे, वर्ण व्यवस्था) को समझने के लिए किया।

सांस्कृतिक निरंतरता: भारतीय समाज की एकता हिंदू धर्म, संस्कृत, और सांस्कृतिक प्रथाओं (जैसे, तीर्थयात्रा, त्योहार) से आती है।

हिंदू-केंद्रित दृष्टिकोण: हिंदू धर्म को सामाजिक एकीकरण का आधार माना, जिसमें जनजातियाँ और अन्य समूह धीरे-धीरे समाहित हो रहे हैं।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण: औपनिवेशिक प्रभावों (जैसे, ब्रिटिश जनगणना) ने जातिगत पहचान को सुदृढ़ किया, लेकिन हिंदू धर्म की मूल संरचना अपरिवर्तित रही।

उदाहरण:

मनुस्मृति में वर्ण व्यवस्था का विश्लेषण, जो ब्राह्मणों की श्रेष्ठता को दर्शाता है।

समकालीन: राम मंदिर आंदोलन (2020) या कुम्भ मेला (2025 की योजना) में हिंदू सांस्कृतिक एकता।

साक्षात्कार प्रश्न (यूपीएससी 2021): “घुर्ये के इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण की विशेषताएँ और इसकी प्रासंगिकता।”

जवाब: “घुर्ये का इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण भारतीय समाज को वेद, पुराण, और सांस्कृतिक प्रथाओं के माध्यम से समझता है। यह हिंदू धर्म को सामाजिक एकता का आधार मानता है, जैसे कुम्भ मेला। यह स्वदेशी दृष्टिकोण पश्चिमी मॉडलों से अलग है, लेकिन अनुभवजन्य डेटा और आर्थिक विश्लेषण की कमी इसकी सीमा है। समकालीन प्रासंगिकता राम मंदिर जैसे सांस्कृतिक आंदोलनों में दिखती है।”

साक्षात्कार टिप: इसे डिजिटल युग में सांस्कृतिक पुनरुत्थान (जैसे, YouTube पर गीता पाठ) से जोड़ें।

(ii) जाति पर घुर्ये का दृष्टिकोण

विवरण: घुर्ये ने जाति को हिंदू समाज की आधारशिला माना, जो छह विशेषताओं से परिभाषित है:

1. खंडीय विभाजन (Segmental Division): अंतर्विवाह द्वारा सीमित।
2. पदानुक्रम (Hierarchy): वर्ण व्यवस्था (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र)।
3. सामाजिक संपर्क पर प्रतिबंध (Restrictions on Interaction): जैसे, भोजन और विवाह।
4. व्यवसाय का विभाजन (Division of Labour): प्रत्येक जाति का विशिष्ट कार्य।
5. सामाजिक और धार्मिक अशुद्धता (Purity-Pollution): जैसे, अस्पृश्यता।
6. जातिगत संगठन (Caste Organizations): जैसे, जाति पंचायतें।

विश्लेषण: घुर्ये ने जाति को स्थिर और सांस्कृतिक इकाई माना, जो हिंदू धर्म और कर्म-धर्म से परिभाषित है। औपनिवेशिक नीतियों (जैसे, 1901 की जनगणना) ने जातिगत पहचान को और सुदृढ़ किया।

उदाहरण:

- वैदिक काल में ब्राह्मणों की धार्मिक और सामाजिक श्रेष्ठता।
- समकालीन: मराठा क्रांति मोर्चा (2016) या जाट आरक्षण आंदोलन (2021)।

आलोचना:

ब्राह्मणवादी पूर्वाग्रह: उच्च जातियों पर अधिक ध्यान; दलितों और निम्न जातियों की गतिशीलता (श्रीनिवास) या शोषण (देसाई) पर कम।

गतिशीलता की अनदेखी: श्रीनिवास की संस्कृतीकरण अवधारणा की तुलना में कम गतिशील।

आर्थिक आयामों की कमी: देसाई की तरह वर्ग-संघर्ष पर ध्यान नहीं।

साक्षात्कार प्रश्न: “जाति पर घुर्ये और श्रीनिवास में अंतर।”

जवाब: “घुर्ये ने जाति को स्थिर और हिंदू धर्म से परिभाषित माना, जैसे वर्ण व्यवस्था, जबकि श्रीनिवास ने इसे गतिशील माना, जैसे संस्कृतीकरण के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता। समकालीन संदर्भ में, घुर्ये की अवधारणा जातिगत संगठनों (जैसे, OBC मंच) को समझने में मदद करती है।”

साक्षात्कार टिप: इसे समकालीन जातिगत राजनीति (जैसे, 2024 लोकसभा चुनाव में OBC वोटबैंक) से जोड़ें।

(iii) जनजाति और हिंदूकरण

विवरण: घुर्ये ने जनजातियों को 'पिछड़े हिंदू' माना, जो हिंदू धर्म की प्रथाओं (जैसे, मंदिर पूजा, त्योहार) को अपनाकर मुख्यधारा में समाहित हो रहे हैं। उन्होंने जनजातीय एकीकरण को सांस्कृतिक एकता का हिस्सा माना।

विश्लेषण: हिंदूकरण की प्रक्रिया भारतीय समाज की एकता को सुदृढ़ करती है। घुर्ये ने जनजातियों को अलग समूह के बजाय हिंदू समाज का हिस्सा माना।

उदाहरण:

- गोंड जनजाति द्वारा राम या हनुमान की पूजा।
- समकालीन: झारखंड में संथालों द्वारा दीवाली या रामनवमी मनाना।

आलोचना:

जनजातीय पहचान की अनदेखी: जनजातियों की विशिष्ट संस्कृति और इतिहास को कम आँका।

आदिवासी प्रतिरोध की अनदेखी: नक्सलवाद या वन अधिकार आंदोलन (2006) जैसे प्रतिरोध को नहीं समझाता, जहाँ देसाई का दृष्टिकोण प्रासंगिक है।

साक्षात्कार प्रश्न: “आदिवासी आंदोलनों पर घुर्ये का दृष्टिकोण।”

जवाब: “घुर्ये आदिवासी आंदोलनों को हिंदूकरण की प्रक्रिया में बाधा मान सकते हैं, लेकिन उनकी विशिष्ट पहचान और आर्थिक शोषण (जैसे, खनन) को कम आँकते हैं। देसाई का वर्ग-संघर्ष दृष्टिकोण इसे बेहतर समझता है।”

साक्षात्कार टिप: इसे वन अधिकार अधिनियम (FRA 2006) या आदिवासी सांस्कृतिक पुनरुत्थान से जोड़ें।

(iv) सांस्कृतिक एकता

घुर्ये ने भारतीय समाज को एक सांस्कृतिक इकाई माना, जो हिंदू धर्म, संस्कृति, और सांस्कृतिक प्रथाओं (जैसे, तीर्थयात्रा, कुम्भ मेला) से एकजुट है।

विश्लेषण: हिंदू धर्म राष्ट्रीय एकता का आधार है। औपनिवेशिक प्रभावों (जैसे, ईसाई मिशनरी) ने इसे कमजोर किया, लेकिन स्वतंत्रता के बाद पुनर्जनन हुआ।

उदाहरण:

- कुम्भ मेला में लाखों हिंदुओं की भागीदारी।
- समकालीन: राम मंदिर उद्घाटन (2024) और हिंदुत्व आंदोलन।

आलोचना:

हिंदू-केंद्रित दृष्टिकोण: मुस्लिम, ईसाई, और अन्य अल्पसंख्यकों की पहचान को कम आँकता है।

आर्थिक असमानता की अनदेखी: देसाई की तरह पूंजीवादी शोषण पर ध्यान नहीं।

साक्षात्कार प्रश्न: “घुर्ये का सांस्कृतिक एकता दृष्टिकोण और CAA/NRC।”

जवाब: “घुर्ये CAA/NRC को हिंदू-केंद्रित सांस्कृतिक एकता के रूप में देख सकते हैं, लेकिन यह अल्पसंख्यक पहचान और सामाजिक समावेशन को कमजोर करता है। श्रीनिवास का गतिशीलता दृष्टिकोण इसे बेहतर संतुलित करता है।”

साक्षात्कार टिप: इसे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद (जैसे, हिंदुत्व) या डिजिटल सांस्कृतिक पुनरुत्थान (जैसे, ऑनलाइन गीता पाठ) से जोड़ें।

प्रमुख रचनाएँ:

घुर्ये की रचनाएँ भारतीय समाजशास्त्र में सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अध्ययनों की नींव रखती हैं। ये साक्षात्कार में उद्धृत करने योग्य हैं।

(i) कास्ट एंड रेस इन इंडिया (1932)

थीम: जाति व्यवस्था का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विश्लेषण; वर्ण व्यवस्था और हिंदू धर्म से इसका संबंध।

विश्लेषण: घुर्ये ने जाति को सामाजिक संगठन का आधार माना, जो अंतर्विवाह, व्यवसाय, और अशुद्धता के नियमों से परिभाषित है। औपनिवेशिक जनगणना ने जातिगत पहचान को और सुदृढ़ किया।

उदाहरण:• मनुस्मृति में ब्राह्मणों की धार्मिक भूमिका। समकालीन: मराठा क्रांति मोर्चा (2016) द्वारा आरक्षण की माँग।

साक्षात्कार प्रश्न: “जाति पर घुर्ये का दृष्टिकोण।”

जवाब: “घुर्ये ने जाति को हिंदू समाज की आधारशिला माना, जो वर्ण और कर्म-धर्म से परिभाषित है। औपनिवेशिक नीतियों ने इसे सुदृढ़ किया, जैसे 1901 की जनगणना। समकालीन संदर्भ में, यह जातिगत संगठनों (जैसे, OBC मंच) को समझने में मदद करता है।”

साक्षात्कार टिप: इसे 2024 लोकसभा चुनाव में जातिगत वोटबैंक या आरक्षण नीतियों से जोड़ें।

(ii) द इंडियन साधुस (1953)

थीम: हिंदू साधुओं की सामाजिक और धार्मिक भूमिका; सांस्कृतिक एकता का प्रतीक।

विश्लेषण: साधु हिंदू धर्म की निरंतरता को बनाए रखते हैं, जैसे तीर्थयात्रा, कुम्भ मेला, और धार्मिक शिक्षाएँ।

उदाहरण: कुम्भ मेला में अखाड़ों की भूमिका। समकालीन: बाबा रामदेव या साध्वी प्रज्ञा जैसे धार्मिक नेताओं का प्रभाव।

साक्षात्कार प्रश्न: “साधुओं की सामाजिक भूमिका पर घुर्ये।”

जवाब: “घुर्ये ने साधुओं को हिंदू धर्म और सांस्कृतिक एकता के प्रतीक के रूप में देखा, जो तीर्थयात्रा और त्योहारों के माध्यम से समाज को जोड़ते हैं। समकालीन संदर्भ में, राम मंदिर आंदोलन में साधुओं की भूमिका इसका उदाहरण है।”

साक्षात्कार टिप: इसे हिंदुत्व आंदोलन या डिजिटल धार्मिक नेताओं (जैसे, YouTube पर प्रवचन) से जोड़ें।

(iii) द अबोरिजिनल्स—सो-कॉल्ड—एंड देयर फ्यूचर (1943)

थीम: जनजातियों का हिंदू समाज में एकीकरण; हिंदूकरण की प्रक्रिया।

विश्लेषण: घुर्ये ने जनजातियों को ‘पिछड़े हिंदू’ माना, जो हिंदू प्रथाओं को अपनाकर मुख्यधारा में शामिल हो रहे हैं। उन्होंने अलगाववादी नीतियों (जैसे, ब्रिटिश संरक्षण) की आलोचना की।

उदाहरण: संधाल जनजाति द्वारा हिंदू त्योहार (जैसे, दीवाली) अपनाना।

समकालीन: आदिवासी क्षेत्रों में RSS की ‘घर वापसी’ गतिविधियाँ।

साक्षात्कार प्रश्न: “जनजातियों पर घुर्ये का दृष्टिकोण।”

जवाब: “घुर्ये ने जनजातियों को हिंदू समाज का हिस्सा माना, जो हिंदूकरण के माध्यम से एकीकृत हो रहे हैं। लेकिन यह दृष्टिकोण उनकी विशिष्ट पहचान और आर्थिक शोषण (जैसे, नक्सलवाद) को कम आँकता है।”

साक्षात्कार टिप: इसे वन अधिकार अधिनियम (2006) या आदिवासी सांस्कृतिक पुनरुत्थान से जोड़ें।

(iv) इंडियन कॉस्ट्यूम्स (1951)

थीम: भारतीय परिधानों का सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्वा।

विश्लेषण: परिधान भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान और क्षेत्रीय विविधता को दर्शाते हैं। घुर्ये ने इसे सांस्कृतिक एकता का प्रतीक माना।

उदाहरण: साड़ी और धोती की सांस्कृतिक प्रतीकता। समकालीन: डिज़ाइनर साड़ी या पारंपरिक परिधानों का फैशन में पुनरुत्थान।

साक्षात्कार प्रश्न: “सांस्कृतिक पहचान पर घुर्ये।”

जवाब: “घुर्ये ने परिधानों को सांस्कृतिक निरंतरता और एकता का प्रतीक माना। समकालीन संदर्भ में, डिज़ाइनर साड़ी और ऑनलाइन फैशन इसका उदाहरण है।”

साक्षात्कार टिप: इसे डिजिटल युग में सांस्कृतिक फैशन (जैसे, Instagram पर पारंपरिक ड्रेस) से जोड़ें।

घुर्ये, श्रीनिवास, और देसाई: विस्तृत तुलनात्मक विश्लेषण

यूपीएससी 2017 प्रश्न: “घुर्ये, श्रीनिवास, और देसाई के दृष्टिकोणों की तुलना करें और उनकी प्रासंगिकता बताएँ”
(20 अंक)

साक्षात्कार जवाब: “घुर्ये का इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण भारतीय समाज को सांस्कृतिक निरंतरता (जैसे, हिंदू धर्म, कुम्भ मेला) के माध्यम से समझता है, श्रीनिवास का कार्यात्मक दृष्टिकोण गतिशीलता (जैसे, संस्कृतीकरण, प्रभुत्वशाली जाति) पर केंद्रित है, और देसाई का मार्क्सवादी दृष्टिकोण वर्ग-संघर्ष (जैसे, हरित क्रांति, किसान आंदोलन) को उजागर करता है। समकालीन मुद्दों (जैसे, राम मंदिर, जातिगत वोटबैंक, डिजिटल डिवाइड) को समझने के लिए इन तीनों को अंबेडकर के जाति-वर्ग दृष्टिकोण या नारीवादी लेंस (जैसे, #MeToo) के साथ जोड़ा जा सकता है।”

समकालीन उदाहरणों के साथ तुलना:

किसान आंदोलन (2020-21):

घुर्ये: इसे सांस्कृतिक एकता के खिलाफ क्षेत्रीय असंतोष के रूप में देख सकते हैं, विशेष रूप से पंजाब और हरियाणा में सिख और जाट पहचान।

श्रीनिवास: प्रभुत्वशाली जातियों (जैसे, जाट) की भूमिका पर ध्यान देंगे, जो आंदोलन का नेतृत्व कर रही थीं।

देसाई: इसे कॉर्पोरेट खेती और पूंजीवादी शोषण के खिलाफ वर्ग-संघर्ष के रूप में विश्लेषित करेंगे।

डिजिटल युग:

घुर्ये: ऑनलाइन धार्मिक सामग्री (जैसे, YouTube पर गीता पाठ) को सांस्कृतिक पुनरुत्थान और हिंदू एकता का प्रतीक मानेंगे।

श्रीनिवास: Instagram पर पूजा या TikTok पर भक्ति गीत को डिजिटल संस्कृतीकरण का रूप मानेंगे।

देसाई: डिजिटल डिवाइड (जैसे, ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की कमी) को पूंजीवादी असमानता का हिस्सा मानेंगे।

CAA/NRC (2019-20):

घुर्ये: इसे हिंदू-केंद्रित सांस्कृतिक एकता के प्रयास के रूप में देख सकते हैं, लेकिन अल्पसंख्यक विरोध को कम आँक सकते हैं।

श्रीनिवास: अल्पसंख्यक समूहों की गतिशीलता (जैसे, मुस्लिम संगठनों का विरोध) पर ध्यान देंगे।

देसाई: इसे राज्य द्वारा उपेक्षित समूहों के शोषण और वर्ग-संघर्ष के रूप में देखेंगे।

समकालीन प्रासंगिकता और सीमाएँ

(i) घुर्ये की प्रासंगिकता

जातिगत राजनीति: घुर्ये का जाति पर दृष्टिकोण समकालीन संगठनों (जैसे, मराठा क्रांति मोर्चा, जाट आरक्षण आंदोलन) और 2024 लोकसभा चुनाव में जातिगत वोटबैंक को समझने में मदद करता है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद: हिंदू धर्म और सांस्कृतिक एकता पर उनका जोर हिंदुत्व आंदोलनों (जैसे, राम मंदिर उद्घाटन, 2024) से प्रासंगिक है।

जनजातीय नीतियाँ: हिंदूकरण की अवधारणा आदिवासी क्षेत्रों में सांस्कृतिक एकीकरण (जैसे, RSS की 'घर वापसी') को समझने में मदद करती है। उदाहरण: वन अधिकार अधिनियम (2006) के तहत आदिवासी सशक्तिकरण।

डिजिटल सांस्कृतिक पुनरुत्थान: Pew Research 2023 के अनुसार, 60% भारतीय युवा ऑनलाइन धार्मिक सामग्री देखते हैं, जो घुर्ये की सांस्कृतिक एकता को दर्शाता है (जैसे, YouTube पर वैदिक प्रवचन)।

शहरीकरण और सांस्कृतिक पहचान: पारंपरिक परिधानों (जैसे, डिज़ाइनर साड़ी) और त्योहारों (जैसे, ऑनलाइन दीवाली पूजा) का पुनरुत्थान घुर्ये के दृष्टिकोण से मेल खाता है।

(ii) घुर्ये की सीमाएँ

ब्राह्मणवादी पूर्वाग्रह: हिंदू-केंद्रित दृष्टिकोण मुस्लिम, ईसाई, और अन्य अल्पसंख्यकों की पहचान को कम आँकता है। उदाहरण: CAA/NRC विरोध में मुस्लिम अस्मिता।

आर्थिक शोषण की अनदेखी: देसाई की तरह वर्ग-संघर्ष या पूंजीवादी असमानता (जैसे, हरित क्रांति की असमानताएँ) पर ध्यान नहीं।

अनुभवजन्य डेटा की कमी: श्रीनिवास के क्षेत्रीय अध्ययनों (जैसे, रामपुरा) की तुलना में ग्रंथ-आधारित दृष्टिकोण कम अनुभवजन्य।

लिंग की अनदेखी: महिलाओं की सामाजिक भूमिका पर कम ध्यान। उदाहरण: #MeToo या लैंगिक समानता आंदोलन।

अद्यतन की आवश्यकता: घुर्ये को अंबेडकर (जाति-वर्ग संयोजन), नारीवादी दृष्टिकोण (जैसे, नेरा देसाई), या पोस्टकोलोनीयल सिद्धांतों (जैसे, रणजीत गुहा) के साथ जोड़कर समकालीन बनाया जा सकता है।

(iii) श्रीनिवास की प्रासंगिकता और सीमाएँ

प्रासंगिकता:

जातिगत वोटबैंक: संस्कृतीकरण और प्रभुत्वशाली जाति की अवधारणाएँ 2024 के चुनावों में प्रासंगिक हैं, जैसे उत्तर प्रदेश में यादव-दलित गठजोड़।

पंचायती राज: प्रभुत्वशाली जातियाँ (जैसे, जाट, मराठा) स्थानीय शासन में प्रभाव रखती हैं, लेकिन 73वाँ संशोधन (1992) ने निम्न जातियों और महिलाओं को सशक्त किया।

डिजिटल संस्कृतीकरण: सोशल मीडिया पर धार्मिक प्रथाएँ (जैसे, Instagram पर पूजा, TikTok पर भक्ति गीत)।

शहरीकरण: पश्चिमीकरण शहरी मध्यम वर्ग में दिखता है, जैसे Netflix, स्टार्टअप संस्कृति।

सीमाएँ:

आर्थिक शोषण की अनदेखी (देसाई की तुलना में)।

लिंग और अल्पसंख्यक मुद्दों पर कम ध्यान (जैसे, #MeToo, मुस्लिम पहचान)।

स्थानीय फोकस; व्यापक नीतिगत परिवर्तन (जैसे, 1991 का उदारीकरण) पर कम ध्यान।

(iv) देसाई की प्रासंगिकता और सीमाएँ

प्रासंगिकता:

किसान आंदोलन (2020-21): कॉरपोरेट खेती के खिलाफ वर्ग-संघर्ष।

वैश्वीकरण: 1991 के उदारीकरण को नव-औपनिवेशिक शोषण के रूप में देखता है।

आदिवासी आंदोलन: नक्सलवाद और खनन विरोध को वर्ग-संघर्ष के रूप में विश्लेषित करता है।

डिजिटल डिवाइड: ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की कमी को पूंजीवादी असमानता मानता है।

सीमाएँ:

नियतिवाद; आर्थिक कारकों पर अत्यधिक जोरा।

लिंग और सांस्कृतिक पहचान पर कम ध्यान।

सूक्ष्म-स्तर की गतिशीलता (जैसे, श्रीनिवास की संस्कृतीकरण) की अनदेखी।

“घुर्ये, श्रीनिवास, और देसाई की प्रासंगिकता और सीमाएँ”

जवाब: “घुर्ये का इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण सांस्कृतिक एकता (जैसे, राम मंदिर) को समझता है, लेकिन हिंदू-केंद्रित है। श्रीनिवास की संस्कृतीकरण और प्रभुत्वशाली जाति अवधारणाएँ जातिगत वोटबैंक और पंचायती राज में प्रासंगिक हैं, लेकिन आर्थिक शोषण की अनदेखी करती हैं। देसाई का मार्क्सवादी दृष्टिकोण किसान आंदोलन और वैश्वीकरण को समझता है, लेकिन लिंग पर कम ध्यान देता है। तीनों को अंबेडकर के जाति-वर्ग दृष्टिकोण और नारीवादी लेंस के साथ जोड़कर समकालीन मुद्दों (जैसे, CAA/NRC, डिजिटल असमानता) को समझा जा सकता है।”

प्रश्न: “घुर्ये का इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण और इसकी समकालीन प्रासंगिकता” (यूपीएससी 2021)

जवाब: “घुर्ये का इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण भारतीय समाज को वेद, पुराण, और हिंदू धर्म के माध्यम से समझता है, जो सांस्कृतिक एकता पर जोर देता है। यह समकालीन हिंदुत्व आंदोलनों (जैसे, राम मंदिर) और डिजिटल सांस्कृतिक पुनरुत्थान (जैसे, YouTube पर गीता पाठ) में प्रासंगिक है। लेकिन इसका हिंदू-केंद्रित दृष्टिकोण अल्पसंख्यकों और आर्थिक शोषण को कम आँकता है, जहाँ देसाई और श्रीनिवास पूरक हैं।”

प्रश्न: “जाति पर घुर्ये, श्रीनिवास, और देसाई में अंतरा”

• **जवाब:** “घुर्ये ने जाति को स्थिर और हिंदू धर्म से परिभाषित माना, जैसे वर्ण व्यवस्था। श्रीनिवास ने इसे गतिशील माना, जैसे संस्कृतीकरण। देसाई ने जाति को आर्थिक शोषण का हिस्सा माना, जैसे दलितों की मजदूरी। समकालीन संदर्भ में, घुर्ये जातिगत संगठनों, श्रीनिवास वोटबैंक, और देसाई असमानता को समझते हैं।”

प्रश्न: “आदिवासी आंदोलनों पर तीनों का दृष्टिकोण”

जवाब: “घुर्ये आदिवासी आंदोलनों को हिंदूकरण में बाधा मानते हैं, श्रीनिवास इन्हें प्रभुत्वशाली जातियों की गतिशीलता से जोड़ते हैं, और देसाई इन्हें पूंजीवादी शोषण (जैसे, खनन) के खिलाफ वर्ग-संघर्ष मानते हैं।”

डेमो लेक्चर

“घुर्ये का इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण और सांस्कृतिक एकता।”

“जाति पर घुर्ये बनाम श्रीनिवास और देसाई।”

“भारतीय समाजशास्त्र में घुर्ये, श्रीनिवास, और देसाई का योगदान।”

(iii) शोध प्रस्ताव

उदाहरण:

“मैं घुर्ये की सांस्कृतिक एकता को डिजिटल युग में विश्लेषित करूँगा, जैसे ऑनलाइन धार्मिक सामग्री (YouTube पर गीता पाठ) और हिंदुत्व। इसे श्रीनिवास की संस्कृतीकरण और देसाई के डिजिटल डिवाइड के साथ जोड़ा जाएगा।”

“जातिगत संगठनों (जैसे, मराठा मोर्चा) पर घुर्ये का दृष्टिकोण लागू करूँगा, इसे श्रीनिवास की प्रभुत्वशाली जाति और देसाई के वर्ग-संघर्ष के साथ तुलना करके।” समकालीन डेटा (जैसे, Pew Research 2023: 60% युवा ऑनलाइन धार्मिक सामग्री देखते हैं) और अंबेडकर का जाति-वर्ग दृष्टिकोण।

साक्षात्कार प्रश्न: “आपका शोध इन समाजशास्त्रियों को कैसे आगे बढ़ाएगा?”

जवाब: “मेरा शोध घुर्ये की सांस्कृतिक एकता को डिजिटल युग में लागू करेगा, जैसे ऑनलाइन हिंदू प्रथाएँ। इसे श्रीनिवास की डिजिटल संस्कृतीकरण और देसाई के डिजिटल डिवाइड के साथ जोड़कर समकालीन असमानताओं को समझा जाएगा।”

घुर्ये: “भारतीय समाज की एकता हिंदू धर्म और सांस्कृतिक प्रथाओं में निहित है।”

श्रीनिवास: “जाति केवल पदानुक्रम नहीं, बल्कि गतिशीलता का माध्यम है।”

देसाई: “समाजशास्त्र को परिवर्तन की केंद्रीय प्रवृत्तियों का अध्ययन करना चाहिए।”

“घुर्ये की सांस्कृतिक एकता हिंदुत्व को समझाती है, लेकिन अल्पसंख्यकों को कम आँकती है। श्रीनिवास की गतिशीलता जातिगत वोटबैंक को समझाती है, लेकिन आर्थिक शोषण पर कम ध्यान देती है। देसाई की असमानता किसान आंदोलनों को समझाती है, लेकिन लिंग पर कम ध्यान देती है।”

पुस्तकें/PDF:

घुर्ये: *कास्ट एंड रेस इन इंडिया* (1932)— *द इंडियन साधुस* (1953) *द अबोरिजिनल्स—सो-कॉल्ड—एंड देयर फ्यूचर* (1943) *इंडियन कॉस्ट्यूम्स* (1951)

श्रीनिवास: *द रिमेम्बर्ड विलेज* (1976) *कास्ट इन मॉडर्न इंडिया* (1962) *इंडिया: सोशल स्ट्रक्चर* (1980)

देसाई: *सोशल बैकग्राउंड ऑफ इंडियन नेशनलिज्म* (1948) *रूरल सोशियोलॉजी इन इंडिया* (1969) *स्टेट एंड सोसाइटी इन इंडिया* (1975)

उदाहरणों का उपयोग:

घुर्ये: राम मंदिर (2024), डिजिटल सांस्कृतिक पुनरुत्थान (YouTube पर गीता)।

श्रीनिवास: जातिगत वोटबैंक (2024 चुनाव), डिजिटल संस्कृतीकरण (Instagram पर पूजा)।

देसाई: किसान आंदोलन (2020-21), डिजिटल डिवाइड।

समकालीन मुद्दों पर तीनों का अनुप्रयोग

नीचे कुछ समकालीन मुद्दों पर घुर्ये, श्रीनिवास, और देसाई के दृष्टिकोणों का अनुप्रयोग दिया गया है, जो साक्षात्कार में उपयोगी होगा।

(i) डिजिटल युग और असमानता

घुर्ये: ऑनलाइन धार्मिक सामग्री (जैसे, YouTube पर गीता पाठ, ऑनलाइन कुम्भ मेला प्रसारण) को सांस्कृतिक एकता और हिंदू पुनरुत्थान का प्रतीक मानेंगे।

श्रीनिवास: सोशल मीडिया पर धार्मिक प्रथाएँ (जैसे, Instagram पर पूजा, TikTok पर भक्ति गीत) को डिजिटल संस्कृतीकरण का रूप मानेंगे।

देसाई: डिजिटल डिवाइड (जैसे, ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की कमी) को पूंजीवादी असमानता का हिस्सा मानेंगे, जहाँ तकनीक अमीर वर्गों तक सीमित है।

साक्षात्कार जवाब: “घुर्ये डिजिटल युग को सांस्कृतिक पुनरुत्थान के रूप में देखते हैं, श्रीनिवास इसे संस्कृतीकरण का डिजिटल रूप मानते हैं, और देसाई डिजिटल डिवाइड को पूंजीवादी शोषण का हिस्सा। इन्हें अंबेडकर के जाति-वर्ग दृष्टिकोण के साथ जोड़कर डिजिटल असमानता को समझा जा सकता है।”

(ii) किसान आंदोलन (2020-21)

घुर्ये: इसे क्षेत्रीय और सांस्कृतिक असंतोष (जैसे, पंजाब में सिख पहचान) के रूप में देख सकते हैं, जो हिंदू-केंद्रित एकता को चुनौती देता है।

श्रीनिवास: प्रभुत्वशाली जातियों (जैसे, जाट, सिख) की भूमिका पर ध्यान देंगे, जो आंदोलन का नेतृत्व कर रही थीं।

देसाई: इसे कॉरपोरेट खेती और पूंजीवादी शोषण के खिलाफ वर्ग-संघर्ष के रूप में विश्लेषित करेंगे।

साक्षात्कार जवाब: “किसान आंदोलन को घुर्ये सांस्कृतिक असंतोष, श्रीनिवास प्रभुत्वशाली जातियों की भूमिका, और देसाई वर्ग-संघर्ष के रूप में देखते हैं। अंबेडकर का जाति-वर्ग दृष्टिकोण इसे और गहराई देता है, जैसे जाट-दलित गठजोड़।”

(iii) CAA/NRC (2019-20)

घुर्ये: इसे हिंदू-केंद्रित सांस्कृतिक एकता के प्रयास के रूप में देख सकते हैं, लेकिन अल्पसंख्यक विरोध (जैसे, शाहीन बाग) को कम आँक सकते हैं।

श्रीनिवास: अल्पसंख्यक समूहों की सामाजिक गतिशीलता (जैसे, मुस्लिम संगठनों का विरोध) पर ध्यान देंगे।

देसाई: इसे राज्य द्वारा उपेक्षित समूहों (जैसे, मुस्लिम, दलित) के शोषण और वर्ग-संघर्ष के रूप में देखेंगे।

साक्षात्कार जवाब: “CAA/NRC को घुर्ये सांस्कृतिक एकता, श्रीनिवास सामाजिक गतिशीलता, और देसाई वर्ग-संघर्ष के रूप में देखते हैं। नारीवादी दृष्टिकोण (जैसे, शाहीन बाग में महिलाएँ) इसे और समृद्ध करता है।”

निष्कर्ष

जी.एस. घुर्ये ने भारतीय समाजशास्त्र को **इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण** के माध्यम से एक स्वदेशी पहचान दी, जो जाति, जनजातीय हिंदूकरण, और सांस्कृतिक एकता पर केंद्रित है। एम.एन. श्रीनिवास ने **संरचनात्मक-कार्यात्मकता** और क्षेत्रीय अध्ययनों के माध्यम से जाति गतिशीलता (संस्कृतीकरण, प्रभुत्वशाली जाति) को समझाया। ए.आर. देसाई ने **मार्क्सवादी दृष्टिकोण** से वर्ग-संघर्ष और पूंजीवादी शोषण को उजागर किया। तीनों समाजशास्त्री भारतीय समाज के विभिन्न आयामों को समझने के लिए पूरक हैं:

घुर्ये: सांस्कृतिक और ऐतिहासिक निरंतरता (जैसे, हिंदुत्व, राम मंदिर)।

श्रीनिवास: सूक्ष्म-स्तर की गतिशीलता (जैसे, जातिगत वोटबैंक, डिजिटल संस्कृतीकरण)।

देसाई: आर्थिक असमानता और वर्ग-संघर्ष (जैसे, किसान आंदोलन, डिजिटल डिवाइड)।

इन दृष्टिकोणों को समकालीन मुद्दों (जैसे, CAA/NRC, डिजिटल युग, किसान आंदोलन) से जोड़ें और उनकी सीमाओं को अंबेडकर के जाति-वर्ग दृष्टिकोण, नारीवादी लेंस (जैसे, #MeToo), या पोस्टकोलोनियल सिद्धांतों (जैसे, रणजीत गुहा) से जोड़ें।